Chapter-2

विलक्ष वाणी कदापि में न श्रृता

STUDY NOTES

MIND MAP

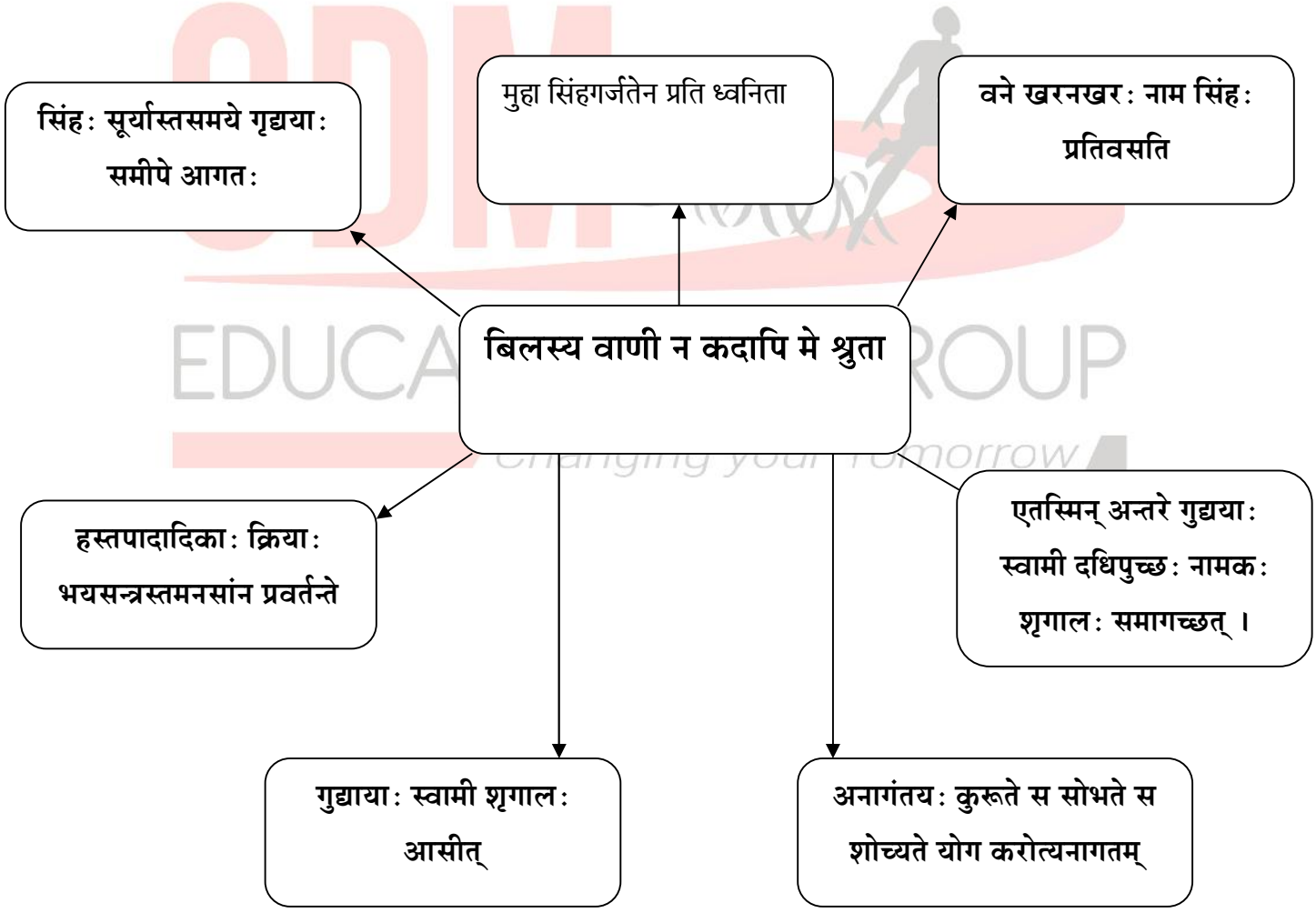

ग्रन्थ – परिचय – विष्णुशर्मा ने राजा अमर शक्ति के मूर्ख पुत्रों को कुशल राजनीतिज्ञ बनाने के उद्देश्य से कथाओं के संकलन के रूप में पञ्चतन्त्र की रचना की थी । इसमें मित्रभेद, मित्रसम्प्राप्ति, काकोलूकीय, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षित – कारक; इन पाँच खण्डों में कुल ७० कथाएँ तथा ९०० श्लोक हैं । श्लोकों में प्राय: तर्कपूर्ण नीतिश्लोक प्रयुक्त हैं । पञ्चतन्त्र का अनुवाद चतुर्थ शताब्दी के आस – पास ईरान की पहलवी भाषा में हुआ था । इसी के आधार पर विदेशी भाषाओं में इसके अनेक अनुवाद हुए ।

'काकोलूकीयम्' पञ्चतन्त्र का तृतीय तन्त्र है । इसका नाम काक और उलूक की मुख्य कथा के कारण पड़ा है ।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow